मुद्रित प्रष्ठों की संख्या : 4 | ई.एच.डी.-01/बी.एच.डी.ई.-101

स्नातक उपाधि कार्यक्रम

सत्रांत परीक्षा

एच्छिक पाठ्यक्रम : हिन्दी

ई.एच.डी.-01/बी.एच.डी.ई.-101 : हिन्दी गद्य

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोटः (i) कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ii) पहला प्रश्न अनिवार्य है।

---

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं तीन की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: 12×3=36

(क) सिरचन जाति का कारीगर है। मैंने घंटों बैठकर उसके काम करने के ढंग को देखा है। एक-एक मोथी और पटेर को हाथ में लेकर बड़े जतन से उसकी कुच्ची बनाता। फिर कुच्चियों को रंगने से लेकर सुतली सुलझाने में पूरा दिन समाप्त। काम करते समय उसकी तन्मयता में जरा भी बाधा पड़ी कि गेहूँअन सांप की तरह फुफकार उठता। फिर किसी दूसरे से करवा लीजिए काम। सिरचन मुँहजोर हैं, कामचोर नहीं।

(ख) मुझे ऐसा लगता है कि मनुष्य अब नाखून को नहीं चाहता। उसके भीतर बर्बर-युग का कोई अवशेष रह जाए, यह उसे असह्य है। लेकिन यह भी कैसे कहूँ, नाखून काटने से क्या होता है? मनुष्य की बर्बरता घटी कहाँ है, वह तो बढ़ती जा रही है। मनुष्य के इतिहास में हिरोशिमा का हत्याकांड बार-बार थोड़े ही हुआ है। यह तो उसका नवीनतम रूप है। मैं मनुष्य के नाखून की ओर देखता हूँ तो कभी-कभी निराश हो जाता हूँ। ये उसकी भयंकर पाश्वी वृत्ति के जीवंत प्रतीक हैं। मनुष्य की पशुता को जितनी बार भी काट दो, वह मरना नहीं जानती।

(ग) निर्मला अवाक् रह गई। लड़के को आज क्या हो गया? और दिन तो चुपके से जाकर काम कर लाता था, आज क्यों त्योरियाँ बदल रहा है। अब भी उसको यह न सूझी कि सियाराम को दो-चार पैसे कुछ खाने को दे दे। उसका स्वभाव इतना कृपण हो गया था, बोली-घर का काम करना तो मजूरी नहीं कहलाती। इसी तरह मैं भी कह दूँ कि मैं खाना नहीं पकाती, तुम्हारे बाबूजी कह दें कि मैं कचहरी नहीं जाता, तो क्यो हो बताओ? नहीं जाना चाहते तो मत जाओ, भँगी से मंगा लूँगी। मैं क्या जानती थी कि तुम्हें बाजार जाना बुरा लगता है, नहीं तो बला से धेले की चीज पैसे में आती, तुम्हें न भेजती। लो आज से कान पकड़ती हूँ।

(घ) राजनीति? राजनीति ही मनुष्यों के लिए सब कुछ नहीं। राजनीति के पीछे नीति से भी हाथ न धो बैठो, जिसका विश्व मानव के साथ व्यापक संबंध है। राजनीति की साधारण छलताओं से सफलता प्राप्त करके क्षण भर के लिए तुम अपने को चतुर समझ लेने की भूल कर सकते हो। परन्तु इस भीषण संसार में प्रेम करने वाले हृदय को खो देना, सबसे बड़ी हानि है। शकराज! दो प्यार करने वाले हृदयों के बीच में स्वर्गीय ज्योति का निवास है।

(ङ) चन्द्रगुप्त! प्रजा के संस्कार जल्दी नहीं छूटते। इस समय भी महाराज नंद से सहानुभूति रखने वाले व्यक्ति कुसुमपुर में विद्रोह की लपटों के स्फुलिंग बने हुए हैं। राजमंत्री राक्षस कुसुमपुर के नागरिकों में अविश्वास के बीजों पर अपनी नीति का जल सींच रहा है।

2. उपन्यास की प्रमुख विशेषताएं बताइये। 16

3. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी का मूल्यांकन कीजिए। 16

4. 'निर्मला' उपन्यास के आधार पर निर्मला के चरित्र की विशेषताएं बताइये। 16

5. एकांकी के तत्वों के आधार पर 'रीढ़ की हड्डी' का मूल्यांकन कीजिए। 16

6. 'नाखून क्यो बढ़ते हैं?' की विशेषताएं बताइये। 16

7. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के प्रतिपाद्य को रेखांकित कीजिए। 16

8. प्रसादोत्तर हिन्दी नाटक के विकास का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कीजिए। 16

9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए: 8×2=16

(क) द्विवेदी युग और निबन्ध विद्या

(ख) 'तोताराम' का चरित्र

(ग) 'शरणदाता' कहानी की भाषा

(घ) प्रेमचंद युग की कहानी

—x—